जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जनवरी 2026 ।। अंक – 66 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

सही सोच ही है
आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम
(पृष्ठ – 02)

छोटे ऋण, बड़े सपने:
पिंकी देवी की आर्थिक
बदलाव की कहानी
(पृष्ठ – 03)

सीमित संसाधनों से सशक्त
उद्यमिता की प्रेरक कहानी
(पृष्ठ – 04)

नया वर्ष, नई उम्मीदें: जीविका दीदियों के जीविकोपार्जन में समृद्धि का संकल्प

नया वर्ष हमेशा नई शुरुआत, नई सोच और नई उम्मीदों का संदेश लेकर आता है। बिहार की लाखों जीविका दीदियों के लिए भी यह नया वर्ष बेहतर रोजगार, आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक जीवन की नई राहें खोलने वाला है। बीते वर्षों में जीविका के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं ने यह साबित किया है कि सही मार्गदर्शन, सहयोग और अवसर मिलने पर वह अपने परिवार और समाज की आर्थिक तस्वीर बदल सकती हैं।

आज बिहार के हर जिले में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएँ छोटे–छोटे प्रयासों से बड़ी सफलता हासिल कर रही हैं। कोई सदस्य बकरी पालन से आमदनी बढ़ा रही है, तो कोई सब्जी उत्पादन, मुर्गी पालन, सिलाई–कढ़ाई, अगरबत्ती निर्माण या किराना दुकान के जरिए अपने घर की जरूरतें पूरी कर रही है। नया वर्ष इन सभी प्रयासों को और मजबूती देने का अवसर है।

इस वर्ष जीविकोपार्जन संवर्धन के क्षेत्र में नवाचार और विस्तार पर विशेष जोर दिया जा रहा है। पारंपरिक जीविकोपार्जन गतिविधियों के साथ–साथ गैर–कृषि आधारित गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि महिलाओं की आय के स्रोत में बढ़ोतरी लाया जा सके। उदाहरण के तौर पर, कई जीविका दीदियाँ अब ऑनलाइन ऑर्डर पर स्थानीय उत्पाद तैयार कर रही हैं, जिन्हें शहरी बाजारों तक पहुँचाया जा रहा है। इससे न केवल उनकी आमदनी बढ़ रही है, बल्कि बिहार की आर्थिक प्रगति भी हो रही है।

नया वर्ष प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के नए अवसर भी लेकर आया है। वित्तीय साक्षरता, बाजार से जुड़ाव, उत्पाद की गुणवत्ता, पैकेजिंग और ब्रांडिंग जैसे विषयों पर दीदियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। इससे वे अपने उत्पाद को सही दाम पर बेच पा रही हैं और बिचौलियों पर निर्भरता कम हो रही है। आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ती ये महिलाएँ अब निर्णय लेने में भी अधिक सक्षम हो रही हैं।

सरकारी योजनाओं और जीविका के सहयोग से पूँजी की उपलब्धता भी आसान हुई है। कम ब्याज पर ऋण, चक्रीय निधि और जीविकोपार्जन निवेश निधि से दीदियाँ अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा रही हैं। कई परिवारों में जहां पहले केवल एक ही कमाने वाला सदस्य था, अब महिलाएँ भी बराबरी से आय अर्जित कर रही है। इसका सीधा असर बच्चों की पढ़ाई, उनका भरण–पोषण और स्वास्थ्य पर दिखाई दे रहा है।

नया वर्ष सामाजिक बदलाव की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। आर्थिक सशक्तीकरण के साथ–साथ जीविका दीदियाँ सामाजिक मुद्दों पर भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। स्वच्छता, पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे विषयों पर जागरूकता फैलाकर वे अपने गाँव को बेहतर बनाने में योगदान दे रही हैं। यह बदलाव धीरे–धीरे लेकिन स्थायी रूप से समाज की सोच को बदल रहा है।

बिहार की जीविका दीदियों के लिए नया वर्ष सिर्फ कैलेंडर का बदलाव नहीं है, बल्कि आत्मनिर्भरता की ओर एक मजबूत कदम है। चुनौतियाँ जरूर हैं, लेकिन अनुभव, एकजुटता और संस्थागत सहयोग के बल पर ये महिलाएँ हर बाधा को पार करने का साहस रखती हैं। उम्मीद है कि यह नया वर्ष उनकी मेहनत को नई ऊंचाइयों तक ले जाएगा और बिहार के ग्रामीण विकास की कहानी को और सशक्त बनाएगा। नया वर्ष जीविका दीदियों के जीवन में नई रोशनी, नई ऊर्जा और नई समृद्धि लेकर आयेगी।

सही सोच ही है आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम

बांका जिले के बांका प्रखंड अंतर्गत कठौन पंचायत के सुपहा ग्राम की निवासी रीना कुमारी एकता जीविका महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। वह सूरज जीविका महिला ग्राम संगठन एवं नारी शक्ति जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ की भी सक्रिय सदस्य हैं। आज रीना कुमारी अपने सफल व्यवसाय के माध्यम से न केवल परिवार का सहारा बनी हैं, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हैं।

जीविका से जुड़ने से पहले रीना कुमारी की पारिवारिक स्थिति सही नहीं थी। उनके पति दूसरे राज्य में कार्य करते थे, उनकी आय से घर का खर्च पूरा नहीं हो पाता था। बच्चों की शिक्षा और दैनिक जरूरतों को लेकर हमेशा चिंता बनी रहती थी। इसी दौरान रीना दीदी ने जीविका स्वयं सहायता समूह के बारे में जाना और वर्ष 2016 में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का निर्णय लिया।

समूह से जुड़ने के बाद रीना दीदी ने नियमित बचत करना सीखा और समूह से ऋण लेकर जीविकोपार्जन गतिविधि की शुरूआत की। उन्होंने सबसे पहले लहटी चूड़ी निर्माण का कार्य शुरू किया और निर्मित चूड़ियों को गाँव की अन्य जीविका दीदियों को बेचना शुरू किया। धीरे–धीरे उनका काम बढ़ने लगा और उन्होंने दुकान खोलकर श्रृंगार की सामान की बिक्री भी शुरू की। जीविका से कम ब्याज दर पर आसानी से ऋण मिलने के कारण उन्हें महाजनों पर निर्भर नहीं रहना पड़ा।

वर्तमान में रीना दीदी पूरे प्रखंड में चूड़ियों की आपूर्ति कर रही हैं। साथ ही वह अपने घर में संचालित दुकान से बच्चों के रेडीमेड कपड़े, श्रृंगार सामग्री और अन्य जरूरी सामानों की बिक्री भी कर रही हैं। सरकारी योजनाओं का लाभ जीविका के माध्यम से मिलने से उनके परिवार का जीवन स्तर काफी बेहतर हुआ है। आज वह बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिला पा रही हैं और सम्मानपूर्ण जीवन भी जी रही हैं।

रीना दीदी का मानना है कि यदि जीवन में कठिनाइयाँ नहीं आतीं, तो समझ लेना चाहिए कि रास्ता सही नहीं है। संघर्ष के माध्यम से ही सफलता मिलती है।

समूह की मदद से सुनैना दीदी बनीं स्वरोजगारी

नवादा जिला के पकरीबरावाँ प्रखण्ड अंतर्गत बुधौली पंचायत के भलुआ गाँव निवासी सुनैना देवी के पास अपना कोई रोजगार नहीं था। वह अपने बच्चे को सरकारी स्कूल में पढ़ाती थी। दूसरे के यहां मजदूरी कर वह अपना और अपने परिवार भरण–पोषण करती थी। इनके पति का भी अपने कोई रोजगार नहीं था।

इस बीच, सुनैना देवी सपना जीविका स्वयं सहायता समूह में जुड़ीं। समूह में जुड़ने के बाद में 25,000 रुपये ऋण लेकर राशन की दुकान की शुरूआत की। उन्होंने ऋण राशि किस्त के अनुसार समूह में वापस कर दी। उसके बाद उन्होंने समूह से दोबारा 25,000 रुपये ऋण लेकर दुकान की पूंजी बढ़ायी जिससे दुकान से होने वाली कमाई धीरे–धीरे बढकर 500 रुपये प्रतिदिन हो गई। उनके बच्चे प्राइवेट स्कूल में पढ़ते हैं। बच्चों की पढ़ाई पर होने वाला व्यय वह स्वयं वहन कर रही है। अब वह अपनी दुकान से होने वाली आमदनी एवं समूह से मिले सहयोग से बहुत ही खुश है।

अब उनके रहन–सहन एवं खान–पान में भी बदलाब आया है। अब वह दुकान चलाने के अलावे कपड़े की सिलाई का कार्य भी करती है। वह महिलाओं को कपड़ा सिलाई सीखाती भी है। कपड़े की सिलाई से उन्हें प्रतिदिन लगभग 200 से 300 रुपये की आय हो जाती है। राशन दुकान से भी रोजाना तकरीबन 400 से 500 रुपये की आय होती है। इस प्रकार उन्हें प्रतिदिन औसतन 700 से 800 रुपये की आय हो जाती है। वह अपने समूह से लिए गए ऋण को किस्त के अनुसार वापसी कर रही है। सुनैना देवी कहती है, 'जीविका समूह का सहयोग मिलने से मैंने व्यवसाय के क्षेत्र में अपना कदम बढ़ाया। इससे मेरे घर की आर्थिक और समाजिक स्थति में बहुत सुधार हुआ है।'

छोटे ऋण, बड़े सपने: पिंकी देवी की आर्थिक बदलाव की कहानी

पटना जिले के दुल्हिन बाजार प्रखण्ड अंतर्गत राजीपुर ग्राम की निवासी पिंकी देवी एक सशक्त महिला उद्यमी हैं। वह अनु जीविका स्वयं सहायता समूह, अमर जीविका महिला ग्राम संगठन एवं क्रांति जीविका महिला विकास स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड, राजीपुर की सक्रिय सदस्य हैं। आज वह अपने परिवार की आर्थिक रीढ़ बन चुकी है।

समूह से जुड़ने से पहले पिंकी देवी के परिवार की स्थिति बेहद कमजोर थी। किसी तरह वह अपने पाँच बच्चों का भरण–पोषण कर रही थी। स्थायी रोजगार न होने के कारण आय का कोई निश्चित स्रोत नहीं था। रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करना मुश्किल होता था और बच्चों की पढ़ाई भी चिंता का विषय बनी हुई थी। इसी बीच उन्हें जीविका स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी मिली, जिसने उनके जीवन में बदलाव की उम्मीद जगाई।

वर्ष 2019 में पिंकी देवी ने अनु जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्यता ली। समूह से जुड़ने के बाद उन्होंने बचत की आदत विकसित की और जीविकोपार्जन गतिविधि शुरू करने के लिए ऋण लेने का निर्णय लिया। उन्हें सर्वप्रथम 10,000 रुपये ऋण लेकर सिलाई की दुकान शुरू की। मेहनत और लगन के कारण दुकान चलने लगा और आय में सुधार होने लगा।

इसके बाद उन्होंने स्वयं सहायता समूह से दूसरी बार 20,000 रुपये का ऋण लेकर ब्यूटी पार्लर की शुरुआत की। यह प्रयास भी सफल रहा और उनकी कमाई बढ़ती चली गई। दोनों व्यवसायों से हो रही अच्छी आय को देखते हुए उन्होंने श्रृंगार की दुकान भी शुरू की। वर्तमान में पिंकी देवी और उनके पति मिलकर इन तीनों दुकानों का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। आज पिंकी देवी की आर्थिक स्थिति पहले से काफी बेहतर है। उनके पास आय के स्थायी स्रोत हैं, बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ रहे हैं और परिवार सम्मानपूर्ण जीवन जी रहा है।

संघर्ष से संबल तक: रीता कुंवर की जीविका से बदली ज़िंदगी

रोहतास जिला अंतर्गत करगहर प्रखंड के पनैली ग्राम की निवासी रीता कुंवर कमल जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य है। वह तारा जीविका महिला ग्राम संगठन एवं उज्जवल जीविका संकुल स्तरीय संघ की भी सदस्य हैं। आठवीं तक पढ़ाई के उपरांत उसकी जल्द ही शादी हो गई थी। लेकिन कुछ ही दिनों के बाद उनके पति का देहांत हो गया। इससे रीता का जीवन बेहद संघर्षमय हो गया था। हालांकि परिस्थितियों के आगे से हार मानने के बजाय उन्होंने आत्मनिर्भरता की राह चुनी।

रीता कुंवर का विवाह वर्ष 2001 में हुआ था। उनके पति अजीत राम परचून की दुकान चलाते थे, जिससे परिवार का भरण–पोषण होता था। आर्थिक दबाव के कारण उनके पति को बाहर राज्य में काम करने जाना पड़ा और परचून की दुकान बंद हो गई। वर्ष 2019 में पति के देहांत ने उनके जीवन को झकझोर दिया। चार छोटे–छोटे बच्चों की जिम्मेदारी अचानक उनके कंधों पर आ गई थी। न खेती थी, न स्थायी रोजगार, फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और बच्चों के भविष्य को संवारने का संकल्प लिया।

रीता कुंवर वर्ष 2013 में कमल जीविका समूह से जुड़ीं। कुछ ही समय में वह समूह की अध्यक्ष भी बनीं। जीविका से जुड़ने के बाद उन्हें बचत, ऋण और आजीविका के अवसरों की जानकारी मिली। प्रारंभ में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत परचून की दुकान का चयन किया गया, लेकिन अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाया।

इसके बाद रीता दीदी ने समूह से 50,000 रुपये ऋण लेकर गाय पालन का व्यवसाय शुरू किया। दूध बिक्री से होने वाली आय परचून दुकान की तुलना में अधिक होने लगी। प्रतिमाह लगभग 4,000 रुपये की बचत करने लगीं। इस आय से उन्होंने तीन बच्चियों का नजदीकी विद्यालय में नामांकन कराया। आज रीता कुंवर आत्मविश्वास के साथ अपने परिवार का अच्छी तरह भरण–पोषण कर रही हैं।

सीमित संसाधनों से सशक्त उद्यमिता की प्रेरक कहानी

गोपालगंज जिले की हथुआ प्रखंड अंतर्गत मानिकपूर गाँव की रहने वाली बेबी देवी आज एक उद्यमी के तौर पर अपनी पहचान बना चुकी है। जीविका समूह से मिले सहयोग और प्रोत्साहन के साथ–साथ उनकी हुनर, लगन और कभी हार न मानने की प्रतिबद्धता ने आज उन्हें इस मुकाम पर पहुंचाया है। बेबी देवी की उद्यमिता की कहानी आज हजारों महिलाओं के लिए किसी प्रेरणा से कम नहीं है।

बेबी देवी यमुना जीविका स्वयं सहायता समूह एवं महावीर जीविका महिला ग्राम संगठन की सक्रिय सदस्य हैं। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में मौसम के अनुसार मांग को समझते हुए आइसक्रीम और कुल्फी निर्माण का व्यवसाय शुरू किया। समूह के सहयोग से उन्होंने 14 अप्रैल 2023 को इस व्यवसाय की शुरुआत की। अपनी मेहनत और हुनर से आज वह "राजीव आइसक्रीम उद्योग" का सफलतापूर्वक संचालन कर पूरे इलाके में अपनी पहचान बना चुकी है।

बेबी देवी ने व्यवसाय स्थापित करने से पहले बाजार की मांग, मौसम आधारित खपत और उत्पादन लागत का गहन अध्ययन किया। इसके बाद लगभग 1000 वर्ग फीट क्षेत्रफल में उत्पादन एवं भंडारण की व्यवस्था की गई। यह स्थान न केवल आइसक्रीम और कुल्फी निर्माण के लिए उपयुक्त है, बल्कि तैयार उत्पादों को सुरक्षित रूप से संग्रहित करने में भी सहायक है। भारी मशीनों के संचालन हेतु कॉमर्शियल इलेक्ट्रिक कनेक्शन लिया गया, जो इस तरह के उद्योग के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। दुकान की मरम्मत, आंतरिक संरचना और मशीनरी सेटअप के लिए लगभग पचास हजार रुपये का प्रारंभिक खर्च किया गया।

उत्पादन क्षमता को बनाए रखने और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक एवं आवश्यक उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, पांच डीप फ्रीज़र तैयार माल के भंडारण के लिए लगाए गए हैं, जिससे स्टॉक लंबे समय तक सुरक्षित रहता है। वितरण व्यवस्था को मजबूत करने के लिए चार ठेले लगाए गए हैं, जो गली–मोहल्लों में जाकर सीधे उपभोक्ताओं तक उत्पाद पहुँचाते हैं।

आइसक्रीम के निर्माण में उच्च गुणवत्तायुक्त सामग्री का उपयोग किया जाता है। कच्चा दूध इसकी आधार सामग्री है, जिससे स्वाद और पोषण दोनों सुनिश्चित होते हैं। विभिन्न प्रकार के फ्लेवर का आइसक्रीम तैयार करने के लिए अलग–अलग एसेंस का प्रयोग किया जाता है, जिससे ग्रामीण उपभोक्ताओं की पसंद के अनुसार स्वाद उपलब्ध हो सके।

निवेश और आय के दृष्टिकोण से यह व्यवसाय अत्यंत सफल सिद्ध हुआ है। इस उद्यम में वह अब तक लगभग आठ लाख रुपये का निवेश कर चुकी है। इसमें से तकरीबन ढाई लाख रुपये की सहायता राशि अतिरिक्त फंड के रूप में प्राप्त हुई। मरम्मत और सेटअप पर पचास हजार रुपये खर्च किए गए। वर्तमान में इस व्यवसाय का मासिक कारोबार लगभग एक लाख रुपये है, जबकि औसतन साठ हजार रुपये मासिक आय प्राप्त हो रहा है। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि सीमित संसाधनों के बावजूद सही योजना और प्रबंधन से उच्च मुनाफा कमाया जा सकता है।

बेबी देवी ने अपने व्यवसाय के माध्यम से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी पैदा किए हैं। वर्तमान में तीन लोग इस इकाई में कार्यरत हैं, जिनमें एक कारीगर, दो हेल्पर एवं सेल्समैन शामिल हैं। यह व्यवसाय मुख्य रूप से मार्च से सितंबर तक यानी लगभग सात महीनों के उच्च मांग वाले सीजन में संचालित होता है। गर्मी के दिनों में आइसक्रीम और कुल्फी की मांग सबसे अधिक रहती है। इसी अवधि में अधिकतम आय अर्जित हो जाती है।

राजीव आइसक्रीम उद्योग एक सफल माइक्रो–मैन्युफैक्चरिंग मॉडल का उत्कृष्ट उदाहरण है। केवल 1000 वर्ग फीट क्षेत्र में संचालन करते हुए, उच्च गुणवत्ता, सही तकनीक और मजबूत वितरण प्रणाली के बल पर यह इकाई उल्लेखनीय मुनाफा कमा रही है। बेबी देवी की यह यात्रा ग्रामीण महिला उद्यमिता के क्षेत्र में प्रेरणा का स्रोत है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार